आज का पुरुषार्थ 14 March 2023

<u>Source</u>: BK Suraj bhai   **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"ड्रामा का विशाल ज्ञान जो स्वयं परम शिक्षक ने आकर हम सबको प्रदान किया है .. अब हम इस ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करे .. इस संसार के लिए .. हर आत्मा के कल्याण के लिए "*

यह **विश्व का नाटक कितना सुन्दर और वन्डरफुल बना हुआ है।** हम इसमें HERO ACTORS है। **सृष्टि के आदि से अंत तक मुख्य पार्ट बजाते आये है।** ड्रामा का विशाल ज्ञान जो संसार में कभी किसी ने किसी को नहीं दिया। स्वयं परम शिक्षक ने आकर हम सबको प्रदान किया।

हम इस **ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करके** अपने चित्त को शान्त किया करे। इस संसार के लिए, हर आत्मा के लिए साक्षी भाव बढ़ाते चले। यहाँ सभी आत्मायें एक्टर्स है ..

" मैं भी एक्टर हूँ .. हीरों एक्टर हूँ "

आज सारा दिन यह याद रखेंगे →

" **मैं हीरों एक्टर हूँ** .. तो मुझे इस स्टेज पर बहुत सुन्दर पार्ट बजाना है .. सारा संसार मेरे पार्ट को देखता है .. ज़रा सा भी मिस्टेक अनेकों में मिस्टेक पैदा कर सकती है .. मेरा ज़रा सा अलवेलापन अनेकों को अलवेलापन सीखा सकता है "

दूसरी बात →

इस ड्रामा में सभी को अपना अपना भाग्य है। किसी की चिन्ता हमें करने की आवश्यकता नहीं। इस श्रेष्ठ ड्रामा में सभी बहुत बुद्धिमान नहीं होते। सभी कमजोर भी नहीं होते। किसी का भाग्य बहुत श्रेष्ठ है तो किसी का कम है। भाग्य को यदि कोई बदलना चाहे तो वह स्वयं तो बदल सकता है, दूसरे उसे मदद कर सकते है, लेकिन चिन्ता करने से कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

तीसरी बात →

दूसरों को देखते हुए उन्हें आत्मिक दृष्टि से देखे और बहुत अच्छी तरह एन्जॉय करे .. " यह सभी आत्मायें अपना-अपना पार्ट बजा रही है " .. साक्षी हो जाये, सबका पार्ट सभी को योग्यता के अनुसार, उनकी बुद्धि के अनुसार, उनकी क्षमताओं के अनुसार बिल्कुल एक्युरेट मिला हुआ है। किसी के पार्ट को देखकर ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए।

कैसा विशाल नाटक है! एक का पार्ट दूसरों से कदापि नहीं मिलता! एक समय का पार्ट दूसरे समय से नहीं मिलता! जितनी आत्मायें है उनका अलग-अलग पार्ट! **आत्मा और प्रकृति के मिलन से चलने वाला विश्व का खेल है!**

अगली बात याद रखेंगे →

सभी इस ड्रामा में अपना-अपना पार्ट बजा रहे है। इसलिए इसमें किसी का भी कोई दोष नहीं है

अगली बात याद रखेंगे →

यह ड्रामा बिल्कुल accurate चल रहा है, जो यहाँ हो रहा है वही **सत्य** है। इसमें कहीं भी कोई कारेक्शन की गुंजाइश नहीं है।

भले किसी को अपना ड्रामा को देखकर लगता हो →

" मेरा तो यह ड्रामा अच्छा नहीं है "

लेकिन हमने अपना ड्रामा स्वयं ही निर्माण किया था, इसलिए हमें उसको स्वीकार करके उसी को एन्जॉय करना चाहिए। और अगर कोई ग़लत बात है, उससे निकालने का प्रयास करना चाहिए।

तो इस तरह ड्रामा की ज्ञान से हम साक्षी भाव धारण करेंगे। और जो आत्मायें **साक्षी भाव** में स्थित हो जाती है वो एक मास का काम एक घन्टे में ही कर सकती है। इतनी शक्ति उनमें आ जाती है।

तो आज सारा दिन

" यह संसार एक सुन्दर नाटक है .. मैं इसमें hero actor हूँ .. और सभी आत्मायें इसमें अपना-अपना पार्ट बजा रही है "

.. यह बहुत अच्छा अभ्यास हम करेंगे।

दूसरा अभ्यास करेंगे →

" मैं आत्मा पार्ट बजाने के लिए इस देह में अवतरित हुई हूँ .. मैं अवतार हूँ .. यह देह बिल्कुल अलग है .. और मैं इससे एकदम न्यारी .. जैसे शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में प्रवेश किया, अवतार लिया .. मैंने भी इस तन में प्रवेश किया है .. परमात्मा के साथ में भी इस मुख्य कार्य में रत हो गई हूँ .. लग गई हूँ "

तो ..

" मैं अवतरित आत्मा हूँ .. मुझे सबको देना है .. मैंने देने के लिए ही अवतार धारण किया है "

.. ऐसी गुड फीलिंग आज सारा दिन रखेंगे और ड्रामा के खेल को पूरी तरह साक्षी होकर देखते रहेंगे ...

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org